1. लग्न शुद्धि

किसी विशेष घटना के घटते समय उस क्षेत्र के पूर्वी क्षितिज पर उदय होने वाली राशि को उस घटना का लग्न कहते हैं। लग्न शुद्धि को पंचांग के सभी अंगों (तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण) से अधिक महत्व दिया गया है क्योंकि किसी कार्य के मुहूर्त में तिथि, नक्षत्र आदि शरीर हैं, चन्द्रमा मन है तो लग्न उस कार्य का प्राण है।

लग्नशुद्धि के लिए निम्न विचारणीय तथ्य।

1. जन्म लग्न और चन्द्र लग्न से आठवीं राशि का लग्न न हो।
2. लग्न से अष्टम और द्वादश भावों में कोई ग्रह न हों।
3. लग्न के केन्द्र और त्रिकोण में अधिक से अधिक शुभ ग्रह हों।
4. लग्न भाव पाप कर्तरी योग में न हो।
5. लग्न से ग्यारहवें भाव में कोई भी ग्रह (शुभ या अशुभ) होना चाहिए। यदि शुभ मिले तो अच्छा है।
6. लग्न से तीसरे और छठवें भाव में पाप ग्रह हों।
7. कार्य की प्रकृति (चर, स्थिर और द्विस्वभाव) के अनुरूप लग्न यदि शीर्षोदय (3,5,6,7,8,11) भी हो तो सोने पर सुहागा समझना चाहिए।
8. लग्न और लग्नेश का सम्बंध नैसर्गिक शुभ ग्रहों से हो न कि नैसर्गिक अशुभ, वक्री, अस्त, नीच और अतिचारी से।
9. त्रिषड़ाय (3,6,11) भाव में पापी लग्नेश का पापत्व नष्ट हो जाता है।
10. जन्म लग्न या चन्द्र राशि से 3,6,10 या 11वीं राशि का लग्न शुभ ग्रहों के प्रभाव में हो, 8 और 12वें स्थान पर कोई ग्रह न हो, और चन्द्रमा लग्न से 3,6,10 या 11वें स्थान पर हों तो सभी कार्यों के लिए लग्न शुद्धि उत्तम है।
11. कार्य में सफलता के लिए **शून्य लग्न** का प्रयोग न हो जैसेः- प्रतिपदा (1) तिथि के दिन तुला लग्न और मकर लग्न शून्य लग्न होते हैं। ठीक इसी प्रकार से तृतीया (3) में सिंह और मकर, पंचमी (5) में मिथुन और कन्या, सप्तमी (7) में धनु और कर्क, नवमी (9) में कर्क और सिंह, एकादशी (11) में धनु और मीन, त्रयोदशी (13) में वृष और मीन लग्न शून्य लग्न होते हैं।

12. जातक की जन्म पत्रिका के सर्वाष्टक में अधिक बिन्दु वाली राशि वाला लग्न भी कार्य की सफलता में सहायक हो सकता है।
13. लग्न शुद्धि के साथ चन्द्र लग्न और D-9 पर भी विचार करना चाहिए।

जन्ममास, जन्मतिथि, पितृ श्राद्धदिन, अधिकमास, क्षयमास, शुक्र और गुरू अस्त अनेकों शुभ कार्य के लिए विचारणीय हैं। (मंगल, शनि और गुरू सर्वदा पश्चिम मे अस्त और पूर्व मे उदित होते हैं जबकि बुध और शुक्र, दोनों दिशाओं में अस्त और उदित होते रहते हैं।)